॥ श्रम ही अराधना है ॥

भारतीय मजदूर संघ

के

चतुर्थ अखिल भारतीय अधिवेशन

१६, २० अप्रैल अमृतसर (पंजाब) 1964

के अवसर पर

स्वागताध्यक्ष

श्री जुगल किशोर गोयनका एडवोकेट

का

भाषण

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरनीय ठेंगड़ी जी तथा प्रतिनिधि बन्धुओ, पंजाब प्रान्त के इस औद्योगिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक नगर में भारतीय मजदूर संघ का चतुर्थ अधिवेशन हो रहा है। यह हम सब नगर-निवासियों के लिए एक गौरव की बात है। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए किए गए अन्दोलनों में अपना इतिहासिक महत्व रखने वाला यह नगर आप सब को यहां पा कर विशेष गरिमा का अनुभव कर रहा है। आप सब लोग श्रमिक हितों के लिए जिस महान लक्ष्य को सामने रख कर यहां एकत्र हुए हैं, वह सर्वथा अभिनन्दनीय है। मैं इस नगर के श्रमिकों के सुधार के लिए कामना और प्रयास करने वाले तथा शासन को श्रमिक विरोधी व्यक्तियों से लोहा लेने वाले नगर निवासियों की ओर से आप सब बन्धओं का हृदय से स्वागत करता हूं।

भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनीतिक इतिहास में अमृतसर नगर एक विशेष महत्व रखता है। सांस्कृतिक दृष्टि से अमृतसर भारत की उस सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जहां पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति और औद्योगिक उन्नति जन कल्याण के लिए समर्पित होती है। धार्मिक दृष्टि से यह एक महान् तीर्थ है। स्वर्ण मन्दिर (दरबार साहिब) और दुर्गयाणा मन्दिर जनता जनार्दन की भावनाओं का प्रतीक हैं। इन दोनों मन्दिरों

की कार सेवा में लाखों की संख्या में पूरे के पूरे नगर ने जिस उत्साह से भाग लिया है, वह अमृतसर की धार्मिक एकता का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। यहां से कुछ ही दूरी पर रामतीर्थ जैसा पवित्र स्थान है जिसे राम कथा का पावन आधार प्राप्त है।

राजनीतिक दृष्टि से इस नगर का महत्व सर्वाधिक है। स्वतंत्रता अन्दोलन में विदेशी सता के सामने यह नगर किस प्रकार देश हित में जूझता रहा है, इसका प्रमाण जलियां वाला बाग है जो प्रति वर्ष वैशाखी के दिन करोड़ों देशवासियों के सिर अपने शहीद स्मारक के प्रति झुका देता है। अमृतसर नगर इस दृष्टि से सम्पूर्ण देश के लिए स्वतंत्रता संग्राम में देशभक्ति की प्रेरणा का अलोक स्तम्भ बना रहा है। शासन की हठधर्मी की एवं जन विरोधी नीतियों से लोहा किस प्रकार लिया जाता है,' यह इस नगर को भली भान्ति याद है। आर्थिक दृष्टि से भी यह नगर पंजाब की औद्योगिक समृद्धि का बहुत बड़ा आधार है। अनेक उद्योगों की इकाइयां न केवल प्रान्तीय आवश्कताओं को पूरा करती हैं वरन् देश और विदेश दोनों में वे अपने उत्पादन के द्वारा कीर्तिमान् स्थापित करती हैं। टैक्सटाइल उद्योग की दृष्टि से इस नगर को विशेष गौरव प्राप्त है। सामरिक दृष्टि से अमृतसर का महत्व पिछले दशकों में लड़े गये युद्धों में स्वत: प्रमाणित हो चुका है। अमृतसर के निवासी अत्याचार व आक्रमण से घबराने वाले नहीं हैं। यह सब को भली भान्ति विदित हो चुका है। ऐसे महत्व पूर्ण नगर में श्रमिकों की दशा

पर गम्भीरता से विचार करना नितान्त आवश्यक था प्रसन्नता की बात है कि भारतीय मजदूर संघ का यह अधिवेशन इस इतिहासिक आवश्यकता को पूरा कर रहा है।

आज सम्पूर्ण देश में सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति के लिए व्यापक पैमाने पर तैयारियां हो रही हैं। शासन देश की वास्तविक दशा को भूल कर अपने स्वार्थों को पूरा करने में व्यस्त है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि गरीबी को हटाने का वायदा करने वाली सरकार गरीबों को ही हटाती चली जा रही है। सम्पूर्ण देश में व्यापक भ्रष्टाचार घटने की बजाय बढ़ता चला जा रहा है। सरकार के द्वारा अपूर्णदर्शी योजनाओं की गलत प्रणाली के कारण आर्थिक असमानता बढ़ी है। सरकार ने कुछ मुठी भर लोगों को आर्थिक सुविधायें दे कर देश में गरीबों की संख्या में बहुत वृद्धि की है। सरकार की गलत नीतियों का ही यह परिणाम है कि वेतन पाने वाले श्रमिक खाने पीने की चीज़ों के मोहताज हो गए हैं। प्रजातन्त्र में आबादी के 60% लोगों का आधे पेट खाकर जीवन व्यतीत करना सरकार के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है। देश को अपना खून और पसीना बहाकर समृद्धि देने वाले श्रमिक भोजन और वस्त्र तक नहीं पाते यह सरकार के लिए कलंक है। इस आर्थिक असन्तुलता के कारण बेरोजगारी और अधिक बढ़ गई है। इन समस्याओं की ओर देश के युवकों ने और राष्ट्र के श्रमिकों ने जब जब आवाज़ उठाई है तो उनकी आवाज़ को पुलिस लाठियों और संगीनों से कुचला गया है। श्रमिकों ने जब जब सरकार को

अपने भूखे पेट और नंगे शरीर दिखाए हैं तो उन्हें इनाम में लाठियां और गोलियां मिली हैं। अभी हाल में ही हुई रेलवे हड़ताल को सरकार ने कितने अमानवीय और अवैध कृत्यों से दबाया है, इसे कहने की जरूरत नहीं। ऐसी संकटपूर्ण अवस्था में हम सब श्रमिकों का समाज और देश के प्रति कर्तव्य बढ़ जाता है। अपने अधिकारों की रक्षा में लड़ने वाला कोई भी श्रमिक सरकार के अत्याचार के खिलाफ कोई भी नवयुवक तथा देश में प्रजातन्त्र की हत्या करने में संलगन सरकार का विरोध करने वाला कोई भी नागरिक अपने संघर्ष में अकेला नहीं है सारा देश उसके साथ है। जिस श्रमिक नीति का समर्थन महात्मा गांधी जी ने किया उसी दिशा में भारतीय मजदूर संघ ने भी 1955 में श्री दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी के नेतृत्व में कार्य आरम्भ किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व गांधी जी से पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि स्वराज्य मिलने पर हर व्यक्ति सुखी होगा। अपने राज्य की गांधी जी ने राम-राज्य से तुलना की। सभी स्वतन्त्रता सैनानियों ने जिनमें लाला लाजपतराय, नेता जी सुभाष इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं अपने स्वप्नों का भारत देखा था जिसमें हर व्यक्ति को पेट भर खाने के लिए रोटी ओढ़ने के लिए कपड़ा तथा रहने के लिए मकान उपलब्ध होगा। किन्तु यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हम देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति की रजत जयन्ती मना चुके हैं और फिर भी श्रमिकों की वोटों पर पलने वाली यह सरकार अभी तक कोई स्पष्ट और स्थिर

श्रमिक नीति नहीं बना सकी है। भारतीय मज़दूर संघ ने भारत के श्रमिकों के लिए स्पष्ट और विशुद्ध रूप से भारतीय नीति अपनाई है। यह विशुद्ध रूप से श्रमिकों का संगठन है और इसका एकमात्र लक्ष्य श्रमिकों के कल्याण के लिए निरन्तर प्रयास करना है। दूसरा कोई भी मज़दूर संगठन राजनीति से ऊपर उठकर श्रमिकों का हित नहीं कर रहा यही कारण है कि कम्युनिस्टों के श्रमिक संगठन श्रमिकों का हित करने में असफल रहे हैं।

भारतीय मज़दूर संघ भारतीय श्रमिक नीति का समर्थन करता है और आर्थिक समानता वास्तविक प्रजातन्त्र तथा नैतिक मूल्यों की एक नई व्यवस्था के निर्माण के लिए कटिबध है। हम वेतन, मंहगाई-भत्ता वृद्धि तथा बोनस जैसी मांगों तक ही सीमित नहीं हैं अपितु कामगारों के इस आन्दोलन को एक धरातल पर लाना चाहते हैं जहां श्रमिक न केवल उत्पादन में भागीदार बने वरन् समाजिक शासन में तथा समाज की नई आर्थिक और सांस्कृतिक रचना में बराबर का महत्व प्राप्त करे। इन समस्याओं का समाधान हमें देश के अन्दर से ही सोचना पड़ेगा। परकीये विचारधाराओं से समस्या उलझती ही गई है। साम्यवादी विचारधारा ने अनेकानेक उलझने पैदा की हैं जिनमें वर्ग संघर्ष बहुत चिन्ता का विषय है। भारतीय मज़दूर संघ एक और दस के अनुपात से धन का बंटवारा करने के लिए कटिबंध होने के साथ ही साथ वर्ग संघर्ष को देश के लिए अत्यन्त हानिकारक

समझता है। यह बड़े गौरव की बात है कि 1955 से लेकर आज तक के देश भर में मजदूर संघ ने अपने काम के विस्तार से भेदभाव को पनपने नहीं दिया।

उद्योगों के क्षेत्र में भारत का एक महान योगदान रहा है। श्रम नीति का प्रतिपादन जो शुक्र नीति, महाभारत के सर्गों और अन्य पुरातन क्षेत्रों में उपलब्ध है, उसे यदि आधुनिक मानदण्डों से देखें तो भी उसे हमें उन्नत, वेगपूर्ण और सरल मानना पड़ेगा। भारतीय मजदूर संघ जो पुनीत-उद्देश्यों को लेकर अग्रसर हुआ है, श्रमिकों का ठीक ठीक पथ-प्रदर्शन कर सकेगा, इसकी हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है।

श्री दत्तोपन्त जी ठेंगड़ी के नेतृत्व में आज यह संगठन शिशुकाल, बाल्यकाल से उभरता हुआ युवाकाल में प्रविष्ठ हुआ है। देश का कोई भी ऐसा भाग नहीं जहां इस संगठन ने अपने विशुद्ध आदर्शवादी कार्यकर्ताओं के परिश्रम से आकर्षित न किया हो। भारतीयों ने समाज को साध्य और शासन को उसका एक साधन माना। भारत में समाज शासन का नियन्त्रण करता है। समाज की धारना शासन निरपेक्ष होती है यही हमारा आदर्श है। हम राष्ट्रवादी होने के नाते अधिकार तथा कर्त्तव्य को एक ही सिक्के के दो पहलू मानते हैं। उत्पादन वृद्धि को हम बहुत महत्व देते हैं। हम संविधान और कानून में श्रद्धा रखते हैं। भारतीय मजदूर संघ की शक्ति सभी साधु तत्वों का सरंक्षण तथा समाज विरोधी तत्वों का दमन दृढ़ता के साथ करेगी।

कम्युनिज्म अपने ही अन्तर विरोध के बोझ के नीचे दबकर खत्म हो रहा है किन्तु हां, वे फिर भी खतरनाक परिस्थिति के निर्माण के लिए माध्यम या साधन बन सकता है। वह परिस्थिति है अराजकता की जो खतरनाक है। कम्युनिस्टों का सबसे मजबूत गढ़ मजदूर क्षेत्र है। इस क्षेत्र में उनका ठीक ढंग से मुकाबला किया जाय तो गड़बड़ करने की उनकी शक्ति बहुत सीमित रहेगी। कम्युनिस्टों के लिए मजदूर क्षेत्र बड़ी महत्वपूर्ण स्थान रखता है जो कि सांप के सम्पूर्ण शरीर में उसके जहरीले दांत का है या बिच्छू के डंक का है। परिस्थितियां ऐसी निर्माण हो गई है कि कम्युनिस्टों को उनके इस गढ़ में से खदेड़ने की जिम्मेदारी मजदूर संघ पर ही आती है। यह सभी राष्ट्रीय शक्तियों की परीक्षा का समय है। हमारी जिम्मेदारी कई गुणा अधिक बढ़ जाती है। इस समय हमने आलस्य किया तो बूंद से गई तो हौद से नहीं आती यह अवस्था होगी। अपने राष्ट्र के जीवन-मरण का यह संग्राम है। इसी को हृदय में ग्रहण कर हम सब अपने-2 स्थान पर जाकर सतत प्रयास करें समय की ऐसी ही मांग है।

भारतीय मजदूर संघ से संलगन संगठनाओं की संख्या लगभग 1350 और उनकी सदस्य संख्या लगभग दस लाख है। भारत के सभी राज्यों में मजदूर संघ का कार्य पहुंच गया है और यह दिन दुगना और रात चौगुना बढ़ रहा है। रेलवे, बीमा निगम बैंक, टैक्सटाइल, इंजनियरिंग, चीनी, प्रतिरक्षा, नगरपालिका, विद्युत इत्यादि

प्रमुख उद्योगों में काफी काम है।

मैं अपनी ओर से तथा अपने नगर की ओर से आदरणीय अध्यक्ष महोदय और सभी प्रतिनिधि बन्धुओं का सादर तथा सप्रेम हार्दिक स्वागत करता हूं। अपना अमूल्य समय निकाल कर तथा अपने परिवारिक कामों को एक ओर रखकर इस अधिवेशन में सम्मिलित होने का जो कष्ट उन्होंने किया उसके लिए हम सभी उनके बहुत आभारी हैं। हम अपने सभी उपस्थित बन्धुओं से यह विनम्र प्रार्थना करते हैं कि यद्यपि उनके आवास तथा भोजन आदि का उचित प्रबन्ध करने में हमने यथाशक्ति प्रयत्न किया है फिर भी यह सम्भव है कि कुछ त्रुटियां रह गई हों, तो वे हमें अपनी उदारता से क्षमा करेंगे।

एक बार पुनः मैं अपनी ओर से तथा स्वागत समिति की ओर आपका हार्दिक स्वागत करता हूं और इस अधिवेशन की सफलता की कामना करता हुआ विदा लेता हूं।

———